



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)  
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 532] नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, दिसम्बर 18, 1986/अग्रहायण 27, 1908  
No. 532] NEW DELHI, THURSDAY, DECEMBER 18, 1986/AGRAHAYANA 27, 1908

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में  
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a  
a separate compilation

वित्त मंत्रालय  
(आर्थिक कार्य विभाग)  
(बैंकिंग प्रभाग)

नई दिल्ली, 18 दिसम्बर, 1986

अधिनियम

का. आ. 925 (अ):—केन्द्रीय सरकार, बैंककारी विनियमन अधि-  
नियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (7) के  
अनुसरण में हिन्दुस्तान कमर्शियल बैंक लिमिटेड कानपुर के पंजाब नेशनल  
बैंक के साथ समामेलन की स्कीम के संबंध में, जो उक्त उपधारा के  
उपबंधों के अधीन केन्द्रीय सरकार द्वारा मंजूर की गयी है, 19 दिसम्बर,  
1986 को विहित तारीख के रूप में विनिर्दिष्ट करती है।

[सं. 17/2/86—बी. ओ. -III (i)]

MINISTRY OF FINANCE  
(Department of Economic Affairs)  
(Banking Division)

New Delhi, the 18th December, 1986

NOTIFICATIONS

S.O. 925(E).—In pursuance of sub-section (7) of  
section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10  
of 1949), the Central Government hereby specifies  
the 19th December, 1986 as the prescribed date in

relation to the scheme for the amalgamation of the  
Hindustan Commercial Bank Limited, Kanpur with  
Punjab National Bank which has been sanctioned by  
the Central Government under the provisions of the  
said sub-section.

[No. 17/2/86-B.O.III(i)]

का. आ. 926(अ):—केन्द्रीय सरकार ने बैंककारी विनियमन अधि-  
नियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (1) के  
अधीन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किए गए आदेश पर, उक्त धारा की  
उपधारा (2) के अधीन, हिन्दुस्तान कमर्शियल बैंक लिमिटेड, कानपुर के  
सम्बन्ध में उक्त धारा 45 की उपधारा (2) के अधीन अधिस्थगन  
आदेश किया है।

और भारतीय रिजर्व बैंक ने उक्त अधिनियम की धारा 45 की  
उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, पंजाब नेशनल  
बैंक के साथ हिन्दुस्तान कमर्शियल बैंक लिमिटेड, के समामेलन की स्कीम  
तैयार की है।

और रिजर्व बैंक ने उक्त धारा की उपधारा (6) के उपबंधों के  
अनुसार उक्त स्कीम का प्राकृतिक संबंधित बैंकों को भेजने के पश्चात् और  
उक्त स्कीम की बाबत प्राप्त सुझावों और आक्षेपों पर विचार करने के  
पश्चात् वह स्कीम उपान्तरित की है और उसे मंजूरी के लिए केन्द्रीय  
सरकार को भेजा है।

इस प्रकार केन्द्रीय सरकार ने उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (7) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए इसमें धारित विनियमों और शर्तों के अधीन रहते हुए इस स्कीम को संजोरी दे दी है।

(1) हिन्दुस्तान कमर्शियल बैंक लिमिटेड, काठपुर, अन्तरगत बैंक होगा और पंजाब नेशनल बैंक अन्तरिती बैंक होगा।

(2) ऐसी तारीख से जिसे केन्द्रीय सरकार उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (7) के अधीन इस प्रयोजन के लिए विनियमित करे (जिसे इसमें इसके पश्चात् विहित तारीख कहा गया है) अन्तरक बैंक के सभी अधिकार, शक्तियाँ, मांग, दावे, हित, प्राधिकार, विशेषाधिकार, साम, अस्तित्व और जंगम और स्थावर सम्पत्ति, जिसके अन्तर्गत भू-संपत्ति के सभी आपत्तियों या पट्टों या करारों द्वारा भारित और उनमें अन्तर्विष्ट/भाटकों और अन्य धनराशियों और प्रभुत्वों के अधीन परिसर, जिसके अधीन वे भारित हैं, सभी कार्यालय, फर्निचर, वियोजित उपकरण, संयंत्र, यंत्र और साधन, बहो, कागज-पत्र लेखन सामग्री स्टॉक, अन्य स्टॉक और सामान, सभी स्टॉक विनिधान, शेयर और प्रतिभूतियाँ, हाथ में और अभिवृद्ध में प्राप्त सभी वृद्धियाँ, सभी हाथ की और लेखा की रोकड़ या बैंकों के पास निक्षेप लेखा (जिसके अन्तर्गत मांग पर या संक्षिप्त सूचना पर धन भी है), बुलियन, सभी वही ऋण, धनक, ऋण और प्रतिभूतियों के फायदे सहित अन्य ऋण या उसकी कोई प्रत्याभूति अन्तरक बैंक के कारबार के संबंध में सभी अन्य, यदि कोई हों, संपत्ति अधिकार और सभी प्रत्याभूतियों के अस्तित्व संबंधी फायदे, इस स्कीम के अन्य उपबंधों के अधीन रहते हुए अन्तरिती बैंक को अन्तरित हो जाएंगे और उसकी संपत्ति और अस्तित्व बन जाएंगे और विहित तारीख से ही अन्तरक बैंक के सभी दायित्व, कर्तव्य और फायदे, इसमें इसके पश्चात् उपबंधित विस्तार तक और रीति में अन्तरिती बैंक के दायित्व, कर्तव्य और दायित्व होने और बन जाएंगे।

पूर्वगामी उपबंधों को व्यापकता पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना सभी संविदाएँ विनियम, वंशानु, करार, मुकदरानामें, विधिक प्रतिनिधित्व की संजोरियाँ और किसी भी प्रकृति की अन्य लिखतें जो विहित तारीख के ठीक पहले अस्तित्वशील या प्रभावशील हों, अन्तरिती बैंक के विरुद्ध या उसके पक्ष में इसमें धारित उपबंधित विस्तार तक और रीति में प्रभावशाली होंगी और जैसे ही कार्याभित की जा सकेगी मानो अन्तरक बैंक के स्थान पर अन्तरिती बैंक उनमें पक्षकार रहा हो, मानो वे अन्तरिती बैंक के पक्ष में जारी की गई हों।

यदि विहित तारीख को अन्तरक बैंक द्वारा या उसके विरुद्ध कोई वाद, अपील या किसी भी प्रवृत्ति की कोई अन्य विधिक कार्यवाही संक्षिप्त है तो उसका उपसमन नहीं होगा, वह बन्ध नहीं होगी या उस पर किसी भी रूप से प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा, किन्तु वह इस स्कीम के अन्य उपबंधों के अधीन रहने हुए अन्तरिती बैंक के द्वारा या उसके विरुद्ध जारी रखी जा सकेगी और प्रवृत्ति की जा सकेगी।

यदि भारत से बाहर के किसी देश की विधि के अनुसार इस स्कीम के उपबंध उस देश में स्थित किसी ऐसी अस्तित्व या दायित्व को जो अन्तरक बैंक के उपक्रम के भाग हैं, अन्तरिती बैंक को अन्तरित या उनमें निहित करने का प्रभाव स्वयं नहीं रखते तो ऐसी अस्तित्व या दायित्व के संबंध में अन्तरक बैंक का कार्यकलाप विहित तारीख से अन्तरिती बैंक के तत्समय के मुख्य कार्यपालक अधिकारी में स्थित हो जाएगा और वह कार्यपालक अधिकारी ऐसी सभी शक्तियों का प्रयोग कर सकेगा तथा ऐसे सभी कार्य और बातें कर सकेगा, जो प्रभावी रूप से इसके कार्यकलाप के परिसमापन के प्रयोजन के लिए अन्तरक बैंक द्वारा प्रयुक्त की जा सकती या की जा सकती है। मुख्य कार्यपालक अधिकारी ऐसा अन्तरण और निहित करने के प्रयोजन के लिए ऐसी सभी कार्यवाहियाँ करेगा, जो भारत के बाहर किसी ऐसे देश की विधियों द्वारा अपेक्षित हों और उस संबंध में मुख्य कार्यपालक अधिकारी, या तो स्वयं या अपने द्वारा हम निमित्त प्राधिकृत किसी व्यक्ति के द्वारा अन्तरक बैंक की अस्तित्वों वसूल कर सकेगा या उसके दायित्व का निर्वाहन करेगा और उसके शुद्ध आयकों का अन्तरिती बैंक को अन्तरित कर देगा।

3. अन्तरक बैंक को बहियाँ बन्द की जाएंगी और उनकी तुलना की जाएगी और तुलन-पत्र प्रथमतः 24 मई, 1986 को कारोबार की समाप्ति पर और तत्पश्चात् विहित तारीख को ठीक पूर्ववर्ती तारीख को कारोबार की समाप्ति पर तैयार किया जाएगा तथा तुलन-पत्र चार्टर्ड लेखाकार या चार्टर्ड लेखाकार या चार्टर्ड लेखाकारों की किसी ऐसी फर्म द्वारा जो भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा इस प्रयोजन के लिए अनुमोदित या नामनिर्दिष्ट हो संपरीक्षित और प्रमाणित कराए जाएंगे।

पूर्वगामी पैरा के उपबंधों के अनुसार तैयार की गई अन्तरक बैंक के तुलन-पत्र की प्रत्येक प्रति अन्तरक बैंक द्वारा प्राप्त हो जाने के पश्चात् यथासंभव सीधे कंपनी रजिस्ट्रार के पास फाइल की जाएगी और तत्पश्चात् अन्तरक बैंक से तुलन-पत्र या लाभ और हानि लेखा तैयार करने या सब्सिडों के समक्ष प्रस्तुत करने या उसकी प्रतियाँ कंपनी रजिस्ट्रार के पास फाइल करने की या तुलन-पत्र और लेखों पर विचार करने के प्रयोजन के लिए या किसी अन्य प्रयोजन के लिए या कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा 159 के उपबंधों के अनुपालन करने के लिए वार्षिक साधारण अधिवेशन बुलाने की अपेक्षा नहीं की जाएगी और तत्पश्चात् अन्तरक बैंक के निवेशक बोर्ड के लिए उस अधिनियम की धारा 283 की अपेक्षानुसार अधिवेशन करना आवश्यक नहीं होगा।

4. 1. अन्तरिती बैंक, अन्तरक बैंक के परामर्श से निम्नलिखित उपबंधों के अनुसार अन्तरक बैंक की सम्पत्तियों और अस्तित्वों का मूल्यांकन करेगा और दायित्वों का संगणना करेगा, अर्थात् :—

(क) सरकारी प्रतिभूतियों से भिन्न विनिधानों का मूल्यांकन विहित तारीख की ठीक पूर्ववर्ती तारीख को विद्यमान बाजार दराँ पर किया जाएगा।

(ख) (i) सरकारी प्रतिभूतियों का मूल्यांकन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बैंक कारो अधिनियम अधिनियम, 1949 की धारा 24 के प्रयोजन के लिए जारी की गई अधिवृत्तना में अधिकृत सिद्धांतों के अनुसार विहित रीति में ठीक पूर्ववर्ती तारीख को यथा विद्यमान रूप में किया जाएगा।

(ii) केन्द्रीय सरकार की प्रतिभूतियों जैसे डाकघर-प्रमाणपत्र, ट्रेजरी बन्ध निक्षेप प्रमाण-पत्र और केन्द्रीय सरकार की लघु बन्ध योजना के अधीन जारी की गई कोई अन्य प्रतिभूतियाँ या प्रमाण-पत्रों का मूल्यांकन उनके अंकित मूल्य के आधार पर या उक्त तारीख को मकद प्राप्त मूल्य के आधार पर, इन दोनों में से जो भी उच्चतर किया जाएगा।

(iii) जहाँ किसी सरकारी प्रतिभूति जैसे जमींदारी उन्मूलन बंध-पत्र या अन्य सामान्य प्रतिभूति जिसको बाबत सूच किस्तों में देय है, का बाजार मूल्य अभिनिश्चित नहीं किया जा सकता है या किसी कारणवश यह माना जाता है कि वह उसका उचित मूल्य प्रदर्शित नहीं करता है या वह अन्यथा उचित नहीं है, तो प्रतिभूति का मूल्यांकन उतनी रकम पर किया जाएगा जो संदल किए जाने वाले बकाया मूल्य और उसकी ब्याज की किस्तों को उस कालावधि को जिसके दौरान ऐसी किस्तें देय हैं, सरकार द्वारा जारी की गई किसी प्रतिभूति के मूल्य को जिससे प्रतिभूति का संबंध है और जिसकी वैसी ही या लगभग वैसी ही परिणवता है तथा अन्य सुसंगत बातों को ध्यान में रखते हुए, युक्तियुक्त समझा जाता है।

(ग) जहाँ किसी प्रतिभूति शेयर, डिबेंचर, बंध-पत्र या अन्य विनिधान का बाजार मूल्य उसके प्रामाण्य बातों से प्रभावित हो जाने के कारण युक्तियुक्त नहीं जाना जाता है, वहाँ विनिधान का मूल्यांकन किसी युक्तियुक्त कालावधि के दौरान उसके औसत बाजार मूल्य के आधार पर किया जाएगा।

(ब) जहाँ किसी प्रतिभूति, शेयर या डिबेंचर या अन्य विनिधान का बाजार मूल्य अभिनिश्चित नहीं किया जा सकता है, वहाँ जारी करने वाले समुदाय की वित्तीय स्थिति, पूर्ववर्ती पाँच वर्षों के दौरान उसके द्वारा संवत् लाभों और अन्य सुसंगत बातों को ध्यान में रखते हुए, केवल ऐसे मूल्य को, यदि कोई है, हिसाब में लिया जाएगा जो मुक्तियुक्त मूल्य माना जाएगा।

(क) शायों की तुष्टि के लिए अर्जित परिसरों और अन्य सभी जंगम संपत्तियों और किन्हीं आस्तियों का मूल्यांकन उनके बाजार मूल्य पर किया जाएगा।

(ख) फर्निचर और फिक्सचर, स्टॉक की लेखन सामग्री और अन्य आस्तियाँ, यदि कोई हों, का मूल्यांकन प्रति बही अधिकृत मूल्य के आधार पर या बसूली योग्य मूल्य के आधार पर, जो भी मुक्तियुक्त समझा जाए, किया जाएगा।

(ग) ग्रथिमों, जिनके अन्तर्गत क्रय की गई और मितिकाटे पर भुगतान की गई ऋणियाँ भी हैं, वही ऋणों और विविध आस्तियों की संवीक्षा अन्तरिती बैंक द्वारा की जाएगी और प्रतिभूतियों जिनके अन्तर्गत उसके आवरक के रूप में धारित प्रत्याभूतियाँ भी हैं, अन्तरिती बैंक द्वारा परेशित और सत्यापित की जाएगी। तत्पश्चात् ग्रथिम जिनके अन्तर्गत उनके भाग भी हैं, वो धेणियों में वर्गीकृत किए जाएंगे, अर्थात् "वे ग्रथिम जिन्हें अच्छा और आसानी से बसूली योग्य माना गया है" और "वे ग्रथिम, जिन्हें आसानी से बसूली योग्य नहीं माना गया है और/या जिनकी बसूली दूधत या शंकास्पद है।

(ii) इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए वायित्वों के अन्तर्गत ऐसे सभी समाश्रित दायित्व भी हैं, जिनके लिए अन्तरिती बैंक से विहित तारीख को या उसके पश्चात् अपने स्वयं के श्रोतों से उचित रूप से पूर्ति करने की आशा या अपेक्षा की जा सकेगी।

(iii) जहाँ किसी आस्ति का मूल्यांकन विहित तारीख को अवधारित नहीं किया जा सकता है, वहाँ वह भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन से, आगतः या पूर्णतः किसी पश्चात्वर्ती तारीख को बसूली योग्य आस्ति के रूप में माना जाएगा।

किसी आस्ति के मूल्यांकन और/या किसी ग्रथिम के वर्गीकरण और/या किसी दायित्व के अवधारण की बाबत अन्तरिती बैंक और अन्तरक बैंक के बीच कोई असहमति है, तो वह मामला भारतीय रिजर्व बैंक को निर्देशित किया जाएगा जिसकी राय अन्तिम होगी, परन्तु जब तक ऐसी राय प्राप्त नहीं हो जाती तब तक अन्तरिती बैंक द्वारा मदों या उसके भाग का मूल्यांकन इस स्कीम के प्रयोजन के लिए अन्तिम रूप से अपनाया जाएगा।

ऐसा करना आवश्यक होने की घना में रिजर्व बैंक के लिए ऐसी तकनीकी राय प्राप्त करना आवश्यक होगा जो वह आस्ति की ऐसी किसी मद के मूल्यांकन या दायित्व की ऐसी किसी मद के अवधारण के संबंध में सम्बन्धित समझे, और ऐसी राय अभिप्राप्त करने का व्यव अन्तरक बैंक की आस्तियों में पूर्ण रूप से देय होगा।

पूर्वगामी उपबंधों के अनुसार आस्तियों का मूल्यांकन और दायित्वों का अवधारण दोनों बैंकों और उसके सदस्यों और लेनदारों पर बाध्यकार होगा।

८. अन्तरक बैंक की संपत्ति और आस्तियों के अन्तरिती बैंक को अवधारण होने के प्रतिक्रम स्वरूप अन्तरिती बैंक इसे और निम्नलिखित

खण्डों में वर्णित विस्तार तक अन्तरक बैंक के दायित्वों का निबंधन करेगा अर्थात्—

(क) विहित तारीख तक कर्मचारीवृन्द प्रतिभूति निक्षेपों सहित उसपर नोबुल ब्याज, यदि कोई है, के साथ उस बैंक के पास अन्तरक बैंक के किसी कर्मचारी द्वारा जमा की गई कोई धनराशि और विहित तारीख को सभी अन्य बाह्य दायित्व, जिसके अन्तर्गत निक्षेप नहीं है, संवत् किए जाएंगे या उनकी पूर्ण व्यवस्था की जाएगी।

#### स्पष्टीकरण

इस पैरा के प्रयोजन के लिए विहित तारीख तक निक्षेप पर देय ब्याज संबद्ध निक्षेप का भाग माना जाएगा।

(ख) प्रत्येक वचत बैंक खाते या चालू खाते या किसी अन्य निक्षेप की बाबत जिसके अन्तर्गत सावधि निक्षेप, नकद प्रमाण-पत्र, मासिक निक्षेप, मांग या संक्षिप्त सूचना पर देय निक्षेप या अन्तरक बैंक के पास कोई अन्य निक्षेप चाहे वे किसी भी नाम से जाने जाते हों और कोई अन्य खाते जो खण्ड (क) के अन्तर्गत नहीं आते हैं जिसके अन्तर्गत इस स्कीम के अधीन देय सीमा तक ब्याज भी है, अन्तरिती बैंक विहित तारीख को संबंधित धारक/कों के नाम में एक तत्समान और वैसे ही खाता खोलेंगे जिसमें विहित तारीख को इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए पैरा (4) में निर्दिष्ट यथा मूल्यांकित आस्तियों में से प्रत्येक खाते के संबंध में उपलब्ध आनुपातिक शेयर मूल्य के रूप में जमा करेगा और इस प्रकार मूल्यांकित उक्त आस्तियों में से वे ग्रथिम जो आसानी से बसूली योग्य नहीं माने गए हैं, या दूधत हैं या जिनकी बसूली शंकास्पद है, कोई अन्य आस्तियाँ या आस्ति के भाग जो विहित तारीख को मूल्यांकित नहीं हैं और अन्य रकम जो उपर खण्ड (क) में वर्णित संदाय या उपबन्धों के लिए अपेक्षित हैं, अव्यजित किए जाएंगे और इस प्रकार मूल्यांकित उक्त आस्तियों में अन्तरक बैंक को जारी किए गए तारीख 24 मई, 1986 के अधिस्थगन आदेश के पैरा 2 के खण्ड (क) (i) के आधार पर किए गए संदायों की संकलित रकम जोड़ेगा।

परन्तु 24 मई, 1986 को कारबार की समाप्ति को या उसके पश्चात् और विहित तारीख के पूर्व किसी निक्षेप खाते से किए गए किसी संदाय की संगणना इस उप पैरा के अधीन जमा की जाने वाली रकम के मंडे की जाएगी और तदनुसार जमा की जाने वाली रकम आनुपातिक शेयर होगी जिसमें ऐसे संदाय की रकम कम कर दी जाएगी।

परन्तु यह और कि जहाँ अन्तरिती बैंक का किसी विशेष खाते में की गई प्रविष्टियों के सही होने के बारे में कोई मुक्तियुक्त संदेह है तो वह रिजर्व बैंक के अनुमोदन से उपर खंड (ग) के आधार पर उस लेखे में किए जाने वाले जमा धनराशि को प्रतिधारित कर सकेगा जब तक कि अन्तरिती बैंक ऐसे खाते में सही प्रतिशेष अभिनिश्चित नहीं कर लेता है।

#### स्पष्टीकरण

"आनुपातिक" पद से, जहाँ तक वह इस पैरा में आता है ऐसी संबंधित रकमों के अनुपात में अभिप्रेत है जो 24 मई, 1986 को कारबार की समाप्ति पर बकाया देय है (विहित तारीख के ठीक पूर्ववर्ती तारीख तक देय ब्याज सहित) और जहाँ तक वह इस स्कीम में अन्यत्र आता है, वे ऐसी संबंधित रकमों के अनुपात में अभिप्रेत है जो संदाय या वितरण के समय बकाया देय है।

(ग) ऊपर खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट जमा धनराशि दिए जाने के पश्चात् अन्तरिती बैंक संभवतः कम से कम बिलम्ब से किन्तु विहित तारीख से तीन मास तक निशेष बोधा और प्रत्येक गारंटी नियम अधिनियम, 1961 के अधीन स्थापित निशेष बीमा और प्रत्येक गारंटी नियम को (जिसे इसमें इसके पश्चात् निगम कहा गया है) एक सूची देगा, जिसमें सभी प्रकार से उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (1) की अपेक्षाओं का अनुपालन किया गया है, और तत्पश्चात् जब भी उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (2) में निर्दिष्ट रकम निगम से प्राप्त हो, अन्तरिती बैंक उस तारीख या तारीखों से जिसको रकम प्राप्त होती है, मात दिन के अन्तर उस खाते में देय धनराशि के विस्तार तक, उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (2) के अनुसार ऊपर खण्ड (ख) में निर्दिष्ट प्रत्येक खातों में जमा करेगा।

परन्तु :—

- (i) यदि खण्ड (ख) में निर्दिष्ट कोई खाता बन्द कर दिया गया या वह ऐसे समय पर जब उस खाते में जमा के लिए रकम निगम से प्राप्त होती है, परिपक्व हो गया है तो उक्त रकम के हकदार व्यक्ति को संदाय अन्तरिती बैंक द्वारा नकद रूप में किया जायेगा।
- (ii) यदि खण्ड (ख) में निर्दिष्ट किसी रकम के हकदार व्यक्ति का पता नहीं लगाया जा सकता है या उसका आसानी से पता नहीं चल पा रहा है तो ऐसे व्यक्ति को देय रकम के लिए उपबन्ध स्वयं निगम की बहियों में किया जाएगा और उसका पुषक रूप से लेखा दिया जाएगा तथा अन्तरिती बैंक को किसी रकम का संदाय करना निगम के लिए आवश्यक नहीं होगा जब तक कि रकम का हकदार व्यक्ति मिल नहीं जाता है या उसका पता नहीं चल जाता है और निगम में अन्तरिती बैंक के माध्यम से उस व्यक्ति की बाबत संदाय करने का विनिश्चय नहीं कर लिया है।
- (ब) विहित तारीख को अन्तरिती बैंक की समावस्त पूंजी की संपूर्ण रकम और धारकता को इयंत और आकास्मि अर्थ के लिए उपबन्ध के रूप में माना जाएगा और अन्तरक बैंक की अन्य आस्तियों में अवसायन और अन्तरक बैंक के सदस्यों के अधिकार अन्तरिती बैंक के संबंध में ऐसे होंगे जो नीचे पैरा (6) में उपबोधित हैं।

6. निम्नलिखित की बाबत:—

- (क) पूर्ववर्ती पैरा के खण्ड (ख) में वर्णित प्रत्येक लेख, की बाबत उस खण्ड और खण्ड (ग) के आधार पर किसी लेख, यदि कोई है, में जमा न किया गया अतिशेष, और
- (ख) अन्तरक बैंक में प्रत्येक शेयर की बाबत जिसकी रकम को विहित तारीख से ठीक पूर्व प्रत्येक शेयर धारक के द्वारा या उसकी ओर से शेयर पूंजी के मध्ये समावस्त रूप में माना गया था या नीचे (1) के अनुसरण में अन्तरिती बैंक द्वारा की गई मांग के मध्ये रकम संवत् की गई थी, संग्रहण लेख के रूप में माना जाएगा और उसे अन्तरिती बैंक की बाहियों में उस प्रकार दर्ज किया जाएगा और लेखा के विरुद्ध संवाय निम्न-लिखित रीति में किया जाएगा; अर्थात् :—
- (1) (क) अन्तरिती बैंक प्रथम : ऐसे व्यक्ति से जो विहित तारीख को अन्तरक बैंक में आस्थगित शेयर धारक के रूप में रजिस्ट्रीकृत था (या जो इस प्रकार रजिस्ट्रीकृत किए

जाने का हकदार होता) ऐसी तारीख या तारीखों से तीन मास के अन्तर जो विनिर्दिष्ट की जाए या जाएं, ऐसे शेयर या शेयरों और बकाया मांगों, यदि कोई हों, की बाबत, उसके द्वारा असंवत्त रह रही अनाहुत रकम का संदाय करने की अपेक्षा कर सकेगा और तत्पश्चात् यदि यह आवश्यक पाया जाता है तो वह ऐसे प्रत्येक व्यक्ति में जो विहित तारीख को, अन्तरक बैंक के साधारण शेयर धारक के रूप में रजिस्ट्रीकृत था (या जो इस प्रकार रजिस्ट्रीकृत किए जाने का हकदार होता) ऐसी तारीख या तारीख से जो विनिर्दिष्ट की जाए, तीन मास के अन्तर ऐसे शेयर या शेयरों या बकाया मांगों, यदि कोई हों, की बाबत उसके द्वारा असंवत्त रह रही अनाहुत रकम का संदाय करने की अपेक्षा कर सकेगा।

(ख) अंतरक बैंक प्रत्येक मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, व्यक्तिगत को कालावधि के लिए छः प्रतिशत वार्षिक व्याज वहित खण्ड (क) के अधीन देय रकम के संदाय की मांग और उसे प्रवर्तित करने के लिए सभी उपलब्ध कदम उठाएगा।

(ii) अन्तरिती बैंक अधिमों, कय या मितिकाटा किए गए भुगतान, हूडियों, बहो अणों और विविध अणों तथा अन्य आस्तियों की बाबत जो "ऐसे अधिमों के रूप में जो आसानी से वसूली योग्य नहीं है और या वसूली के लिए हूबंत या आकास्मद" हैं, के रूप में वर्गीकृत किया गया है : या जो ऊपर पैरा 4 के आधार पर विहित तारीख के पश्चात् पूर्णतः या भागनः वसूली योग्य है या हो सकते हैं के संबंध में मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, संदाय की मांग और उसे प्रवर्तित करने के लिए सभी उपलब्ध कार्यवाही करेगा परन्तु यह और कि किसी अण या आस्ति की रकम 50,000 रुपये से अधिक है, तो अन्तरिती बैंक भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन के बिना :

(क) अण या किसी अन्य व्यक्ति के साथ कोई समझौता या ठहारा नहीं करेगा या किसी ऐसे अण या आस्ति को बट्टे खाते में नहीं डालेगा।

(ख) उसे अंतरित किन्हीं प्रतिभूतियों का या उसके द्वारा ली गई किसी आस्ति का विक्रय या अन्यथा व्ययन नहीं करेगा।

(iii) इसके अतिरिक्त, अन्तरिती बैंक, बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 45ब के साथ और कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा 543 के साथ भी पठित बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 45 ठ के अधीन अंतरिती बैंक के किसी संप्रवर्तक, निदेशक, प्रबन्धक या अन्य अधिकारी के विरुद्ध उच्च न्यायालय द्वारा नुकसान के रूप में अधिनियमित की गई रकम यदि कोई हो, की मांग करने और उनका संदाय करवाने के लिए प्रत्येक मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए सभी उपलब्ध कार्यवाहियां करेगा;

(iv) अन्तरिती बैंक, उपर्युक्त खण्ड (i), (ii) और (iii) में उल्लिखित सबों के कारण अपने द्वारा की गई वसूलियों में से किसी समावस्त बाधित की बाबत और रिजर्व बैंक के पूर्व अनुमोदन से किसी ऐसे बाधित

छाते वह सम श्रित हो या अत्यधिक, की बात, जिसे उपर्युक्त पैरा (4) के निर्बंधनों के अनुसार निधारित नहीं किया गया था और जो विहित तारीख को या उसके पश्चात् उपभूत हुआ है या जिसका पता चला है संदाय कर सकेगा या उस सीमा तक, जो पैरा 5 के अधीन उसके लिए किया गया उपबंध अयोज्य है, उपबंध कर सकेगा।

(v) अन्तरिती बैंक, उपर्युक्त खंड (i) (ii) और (iii) में उल्लिखित भवों के कारण अपने द्वारा की गई वसूतियों में से, उस प्रयोजन के लिए उपगत धन का और भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन से ऐसे अन्य व्ययों की, जो उचित समझा जाए, उसमें से कटौती करने और उपर्युक्त खण्ड (v) के निर्बंधनों के अनुसार उसमें से रकम विनियोजित करने के पश्चात् या ऐसे प्रतिशेष, यदि कोई हो, में से, जो ऐसे दायित्वों की सीमा अंतिम रूप से प्रतिनिविष्ट की जाने के पश्चात् इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए यथा संगठित समाधित दायित्वों की बाबत उपबंध में से उपलब्ध हो।

(क) निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम अधिनियम, 1961 की धारा 18 की उपधारा (2) के अधीन अन्तरिती बैंक द्वारा निगम से प्राप्त रकम और निगम द्वारा उपबंधित रकम, यदि कोई हो, का संदाय करेगा, और

(ख) ऐसे निक्षेप-कर्ताओं के मामले में, जिनकी बाबत अन्तरिती बैंक द्वारा कोई रकम निगम से प्राप्त नहीं की गई है, संग्रहण छाते की बाबत शोध्य रकमों का और ऐसे निक्षेप-कर्ताओं के मामले में, जिनकी बाबत अन्तरिती बैंक द्वारा कोई रकम निगम से प्राप्त की गई है या निगम द्वारा उपबंधित की गई है, निगम द्वारा किए गए या उपबंधित संदाय की बाबत निगम को उक्त छाते से शोध्य रकमों को उपर्युक्त उपखण्ड (क) के उपबंधों के अनुसार पहले संदत्त किए जाने के पश्चात् उनके संग्रहण छाते में उन्हें शोध्य प्रतिशेष, यदि कोई हो, का संदाय करेगा।

परन्तु यह कि निगम को शोध्य रकम, यदि ऐसा करना आवश्यक हो तो, अन्तरिती बैंक की दहियों में उपबंधित की जाएगी तथा निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम साधारण विनियम, 1961 के विनियम 22 खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट रीति से निगम को संदत्त की जाएगी।

परन्तु यह और कि अन्तरिती बैंक, उपर्युक्त खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट संदाय उस दशा में करेगा:—

- (i) यदि पैरा (5) के खण्ड (ख) में उल्लिखित तत्समान या समरूप छाते को बंद नहीं किया गया है या वह उस छाते में प्रत्यय द्वारा भुगतान के लिए परिपक्व नहीं हुआ है; और
  - (ii) यदि उक्त छाते को बंद कर दिया गया है या वह एकदम भुगतान के लिए परिपक्व हो गया है।
- (vi) उपर्युक्त खण्ड (v) के उपखण्ड (क) के निर्बंधनों के अनुसार निगम को शोध्य रकमों और उक्त खण्ड के उपखण्ड (ख) के निर्बंधनों के अनुसार निक्षेपकर्ताओं के संग्रहण छाते में शोध्य रकमों की श्रेणी आपस में समान होगी, और यदि उनका संदाय पूर्णतः नहीं किया जा सकता तो उनी समान अनुपात में कभी होंगी।

(vii) इस पैरा के खण्ड (v) में निविष्ट संदाय के लिए जाने या पूर्णतः उपबंधित किए जाने के पश्चात्, अन्तरिती बैंक, खण्ड (v) में निविष्ट रकमों के उस प्रतिशेष, जो उसके पास उपलब्ध हो, में से, अन्तरक बैंक के भूतपूर्व शेयर धारकों के छाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो, हेतु ऐसी रीति से और उस सीमा तक, जो नीचे विनिर्दिष्ट है, भानुपातिक संदाय करेगा;

(क) प्रथमतः सब छाते के लिए पूर्णतः संदाय किए जाने तक अन्तरक बैंक के भूतपूर्व अधिमान शेयरधारकों के छाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो;

(ख) द्वितीयतः सब छाते के लिए पूर्णतः संदाय किए जाने तक अन्तरक बैंक के भूतपूर्व सामान्य शेयरधारकों के छाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो, और उसके पश्चात्

(ग) तृतीयतः सब छाते के लिए पूर्णतः संदाय किए जाने तक अन्तरक बैंक के भूतपूर्व आस्थगित शेयरधारकों के छाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो;

(घ) उपर्युक्त उपखण्ड (क), (ख) और (ग) में उल्लिखित सब रकम को पूर्णतः संदत्त करने के पश्चात् अन्तरिती बैंक के पास बाकी बचे अधिशेष का अन्तरक बैंक के भूतपूर्व सामान्य शेयरधारकों के बीच भानुपातिक वितरण किया जाएगा।

परन्तु यह कि यदि कोई प्रश्न उठता है कि उपर्युक्त किसी उपखण्ड में उल्लिखित छाते के लिए कोई रकम शोध्य है या नहीं हो तो उसे भारतीय रिजर्व बैंक को निर्दिष्ट किया जाएगा जिसका उसपर निर्णय अंतिम होगा।

(viii) इस पैरा में निविष्ट संग्रहण छाते में शोध्य रकम के बारे में केवल अन्तरिती बैंक का वायित्व उस सीमा तक समझा जाएगा जो इस स्कीम में उपबंधित है।

(ix) विहित तारीख या ऐसी पूर्वतन्त्र अवधि से, जो वैधानिक सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक से परामर्श करने के पश्चात् इस प्रयोजन के लिए निर्दिष्ट करे, बारह वर्ष के अवसान पर इस पैरा के खंड (ii) में निविष्ट किसी ऐसी मूल्य का जो उस तारीख तक वसूल नहीं की जा सकी हो, मूल्यांकन अन्तरिती बैंक द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक के परामर्श से किया जाएगा और अन्तरिती बैंक, उक्त मूल्यांकन को ध्यान में रखते हुए, अवधारित कोई रकम, इस पैरा के खण्ड (iv) में निविष्ट दायित्वों को पूर्ति के लिए आवश्यक किसी ऐसी राशि की, जो उपर्युक्त खण्ड (v), (vi) और (vii) उपबंधित क्रम और रीति से उस तारीख तक बकायी जाने से रह गई हो, पहले उनमें से कटौती करके वितरित करेगा;

(x) अन्तरिती बैंक, पूर्वतन्त्र खण्ड (i), (ii) और (iii) में उल्लिखित भवों के कारण वसूल किए गए ऐसे धन को, जिनकी तुरन्त संदाय के लिए उसके द्वारा अपेक्षा किए जाने की सम्भावना नहीं है, अपने पास या किसी अन्य बैंक या बैंकों के पास ब्याज वाले निक्षेपों में, ऐसी रीति में और ऐसी अवधि के लिए, जो मामले के तथ्यों और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उपर्युक्त हो या जैसा भारतीय रिजर्व बैंक निदेश दे, विनिर्दिष्ट करेगा। प्रोद्भूत ब्याज को खण्ड (iv), (v), (vi), और (vii) में निविष्ट दायित्वों की पूर्ति के लिए उनमें उपबंधित रीति से उपयोगित किया जाएगा।

पृष्ठ 7] किसी अभिव्यक्त या विवक्षित संविधा में किसी प्रतिकूल बात के होते हुए भी, पैरा (5) के निर्बंधनों के अनुसार अन्तरिती बैंक के

पास खोले गए गए खाते की बाबत भ्राम्य का संवाय किया जाएगा और उससे केवल उन या भगले उत्तरवर्ती पैराओं के उपबंधों के अनुसार ऐसी बातों पर, जो अन्तरिती बैंक अनुमान करे, जमा किया जाएगा।

8. कोई भी निषेधकर्ता या अन्तरक बैंक का अन्य लेनदार, उसके प्रति अन्तरक बैंक के किसी दायित्व की बाबत अन्तरक बैंक या अन्तरिती बैंक से, इस स्कीम द्वारा विहित सोमा के सिवाए, कोई मांग करने का हकदार नहीं होगा।

9. केन्द्रीय सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक या अन्तरिती या अन्तरक बैंक के खिलाफ किसी ऐसी बात के लिए कोई वाद या अन्य विधिक कार्यवाहियाँ नहीं होंगी, जो इस स्कीम के अनुकरण में सदाभावपूर्वक की गई है या की जाने के लिए प्राणवित्त है।

10. उत्तरवर्ती पैरा में विनिर्दिष्ट अनुसूची में विनिर्दिष्ट कर्मचारियों से भिन्न अन्तरक बैंक के सभी कर्मचारी सेवा में बने रहेंगे और यह समझा जाएगा कि उन्हें अन्तरिती बैंक द्वारा उसी पारिश्रमिक और सेवा के उन्हीं निबंधनों और शर्तों पर नियुक्त किया गया है जो 24 मई 1986 को कारबार बंद होने के ठीक पहले ऐसे कर्मचारियों को लागू थीं।

परन्तु यह कि अन्तरक बैंक के ऐसे कर्मचारी, जिन्होंने अन्तरक बैंक या अन्तरिती बैंक को, उन तारीख के, जिनको यह स्कीम केन्द्रीय सरकार द्वारा मंजूर किया गया है, ठीक आगामी एक मास के अवसान के पूर्व किसी भी समय अन्तरिती बैंक के कर्मचारी न होने के अपने आग्रह के बारे में लिखित सूचना द्वारा सूचित किया है, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 के उपबंधों के अधीन ऐसे प्रतिकर, यदि कोई हो, और ऐसे पेंशन, उपदान भविष्य निधि और सेवानिवृत्ति फायदे के संदाय के लिए हकदार होंगे, जो 24 मई, 1986 को कारबार के बंद होने के ठीक पहले अन्तरक बैंक के प्राधिकरण नियमों के अधीन सामान्य तौर पर अनुमेय हों।

परन्तु यह और कि अन्तरक बैंक के ऐसे कर्मचारियों की वास्तव, जिनके बारे में यह समझा जाता है कि उन्हें अन्तरिती बैंक के कर्मचारियों के रूप में नियुक्त किया गया है, अन्तरिती बैंक के बारे में भी यह समझा जाएगा कि उसमें अन्तरिती बैंक की सेवा में रहने के दौरान उनकी छंटनी की दशा में इस आधार पर छंटनी प्रतिकर के संदाय का दायित्व लिया है की उनका सेवा निरन्तर बनी रही है और अन्तरिती बैंक में उनके स्थानांतरण से विच्छिन्न नहीं हुई है।

11. इस स्कीम से उपाबद्ध अनुसूची में विनिर्दिष्ट व्यक्ति, विहित तारीख को अन्तरक बैंक के कर्मचारी नहीं रह जाएंगे और तत्समय प्रवृत्त किसी विधि या किसी करार या संविदा में किसी बात के होने हुए भी, इस प्रकार विनिर्दिष्ट व्यक्ति, केवल ऐसे पेंशन, उपदान, भविष्य निधि और अन्य सेवानिवृत्ति फायदे के हकदार होंगे, जो 24 मई 1986 को कारबार के बंद होने के ठीक पहले अन्तरक बैंक के प्राधिकरण नियमों के अधीन उन्हीं सामान्य तौर पर अनुमेय हों।

परन्तु यह कि नियोजन की क्षति के लिए प्रतिकर, यदि कोई हो, जहाँ तक उसका संबंध सेवा की किसी संविदा के अन्तर्गत भाग से है, केवल वही होगा जो रिजर्व बैंक द्वारा प्रवधारित किया जाए (इस बाबत जिसका प्रवधारण अंतिम और प्रावदकर होगा)।

परन्तु यह और कि इसमें की किसी बात से यह नहीं समझा जाएगा कि वह अन्तरिती बैंक को किसी ऐसे व्यक्ति के जिसका नाम इस स्कीम से उपाबद्ध अनुसूची में विनिर्दिष्ट किया गया है, ऐसी हैसियत में और ऐसे निबंधनों और शर्तों पर, जो अन्तरिती बैंक उचित गमसे, पुननियोजन करने से निवारित करती है।

12. अन्तरिती बैंक, उस तारीख से, जिसको इस स्कीम को मंजूर किया जाता है, तीन वर्ष से अधिक अवधि के अवधान पर, अन्तरक बैंक

के कर्मचारियों को वही पारिश्रमिक और सेवा के वही निबंधन और शर्तें संवाय या मंजूर करेगा, जो अन्तरिती बैंक के तत्समान बैंक या प्रास्थिति के कर्मचारियों को, अन्तरिती बैंक के ऐसे अन्य कर्मचारियों के समान या समनुव्य अन्तरक बैंक के उक्त कर्मचारियों के पास अर्हताक और अनुभव के अधीन रहते हुए, लागू हों।

परन्तु यह कि यदि कोई शंका या मतभेद उत्पन्न होता है कि उक्त कर्मचारियों में से किसी को अर्हताएँ या अनुभव अन्तरिती बैंक के तत्समान बैंक या प्रास्थिति के अन्य कर्मचारियों को अर्हताएँ और अनुभव के समान या समनुव्य है या नहीं या वह अन्तरिती बैंक के तत्समान में कर्मचारियों का चेतन नियत करने के लिए भ्रान्ताएँ आने वाले सिद्धांतों की प्रक्रिया के संबंध में है, तो शंका या मतभेद को भारतीय रिजर्व बैंक को निदिष्ट किया जाएगा जिसका उस पर विनिश्चय अंतिम होगा।

13. यथास्थिति, अन्तरक बैंक या अन्तरिती बैंक के कर्मचारियों के लिए गठित किसी भविष्य निधि और या उपदान निधि के ग्राह्यी या प्रशासक, विहित तारीख को या उसके पश्चात् यथासम्भव शीघ्र अन्तरिती बैंक के लिए गठित कर्मचारी भविष्य निधि और/या उपदान निधि के ग्राह्यी को, या अन्यथा, जैसा अन्तरिती बैंक निदेश दे, अन्तरक बैंक के कर्मचारियों के फायदे के लिए ग्राह्य में धारित सब धन और विनिधान अन्तरित कर देंगे।

परन्तु यह कि ऐसे पश्चात्पत्तों ग्राह्यी, विनिधानों के मूल्य में किसी कमी के लिए, या विहित तारीख के पहले किए गए किसी कार्य, उद्देश, या व्यक्तिकर की बाबत दायी नहीं होंगे।

14. अन्तरिती बैंक, ऐसे विवरण और जानकारी भारतीय रिजर्व बैंक को भेजेगा, जो भारतीय रिजर्व बैंक इस स्कीम के कार्यान्वित करने के संबंध में सत्य-सत्य पर प्रोत्सा करे।

15. अन्तरिती बैंक, अन्तरक बैंक के कार्यकलाप का विवरण, ऐसे प्राह्य में और ऐसे कालिक अंतरालों पर, जो भारतीय रिजर्व बैंक इस निमित्त विनिर्दिष्ट करे, अन्तरक बैंक के व्यवहारकों को भेजेगा। ऐसे विवरणों का भेजा जाना तब रोका जाएगा जब रिजर्व बैंक ऐसा निदेश दे।

16. किसी ऐसी सूचना या अन्य संसूचना के बारे में, जिसकी अन्तरिती बैंक द्वारा दी जाने की अपेक्षा की जाती है, उस दशा में यह समझा जाएगा कि उसे सत्य-सत्य का में दे दिया गया है, यदि अन्तरक बैंक की पुस्तकों में रजिस्ट्रीकृत पते पर, जब तक कि कोई मया पता अन्तरिती बैंक की पुस्तकों में रजिस्ट्रीकृत न हो, प्रेषित को संबोधित किया गया है और उसे पूर्व-संरक्षित सामान्य डाक से भेज दिया गया है, और ऐसी सूचना उसे डाक में डाले जाने के पश्चात् अर्हताक पते के अग्रमान पर तामीत की गयी समझी जाएगी। इसके प्रतिरिक्त, किसी ऐसी सूचना या संसूचना को, जो सार्वजनिक हित की हो, एक या अधिक बैंकिंग समाचार पत्रों में, जिसका परिवर्तन ऐसे स्थानों पर हो जहाँ बैंक अपने कारबार का सम्बन्ध कर रहा था, विज्ञापित किया जाएगा।

17. यदि किसी स्कीम के किसी उपबन्ध का निर्वहन करने समय कोई शंका उत्पन्न होती है तो मामले को भारतीय रिजर्व बैंक को निदिष्ट किया जाएगा और उसकी राय निश्चायक होगी और अन्तरिती बैंक और अन्तरक बैंक दोनों पर तथा इस प्रत्येक बैंक के सभी सदस्यों, निषेधकर्ताओं और अन्य लेनदारों तथा कर्मचारियों पर भी और किसी ऐसे अन्य व्यक्ति पर जितना इन बैंकों में से किसी के संबंध में कोई अधिकार या दायित्व है, प्रावदकर होगी।

18. यदि इस स्कीम के उपबंधों को प्रभावी करने में कोई कठिनाई उत्पन्न होती है तो केन्द्रीय सरकार, अन्तरक और अन्तरिती बैंकों को या उनमें से किसी को, ऐसे निदेश, जो इस स्कीम से असंगत न हो, जारी कर सकेगी, जो केन्द्रीय सरकार को भारतीय रिजर्व बैंक से परामर्श करते

परबाष्प कठिनाई दूर करने के प्रयोजन के लिये आवश्यक या उपयुक्त प्रतीत हो।

19. श्री जिव कुमार तुलसियान और अन्यो द्वारा दारर की गयी 1986 की 15721 और 1986 की 15085 की विशेष इजाजत याचिकाओं को रद्द करते हुए माननीय उच्चतम न्यायालय के आदेश को प्रकाश में, केन्द्रीय सरकार, यदि इस बात से संतुष्ट हो कि ऐसा करना जरूरी है, स सर्वोच्च को चर्चा कर सकती है, इससे परिवर्तन कर सकती है या इसे वापस ले सकती है।

[सं. 17/2/86 बी. ओ. III (ii)]

मन्त्रेश्वर झा, संयुक्त सचिव

#### घनसूची

बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (7) के अधीन केन्द्रीय सरकार द्वारा मंजूर की गई हिन्दुस्तान कमर्शियल बैंक लिमिटेड के समामेलन के लिए स्कीम से संलग्न और उतका भागरूप घनसूची।

कर्मचारी का नाम	अन्तरक बैंक में पदनाम
1. श्री बी. पी. निधल	महायक महाप्रबंधक, कानपुर
2. श्री जे. एल. गंभीर	सहायक महाप्रबंधक, कानपुर
3. श्री आर. डी. शाह	महायक महाप्रबंधक, कानपुर
4. श्री आर. के. बाजपेई	सहायक महाप्रबंधक, कानपुर
5. श्री जे. के. सेठ (निलम्बनाधीन)	प्रबंधक शाखा कार्यालय, कोट भूतपूर्व प्रबंधक, शाखा कार्यालय आगरा
6. श्री सतबीर सिंह (निलम्बनाधीन)	अधिकारी, शाखा कार्यालय हल्द्वानी
7. श्री एम. सी. प्रवर्धनी (निलम्बनाधीन)	प्रबंधक, ज्वालामपुर
8. श्री बी. एस. धरोहरा (निलम्बनाधीन)	आर. एम. श्री. बंडीगढ़
9. श्री आर. एल. जैन (निलम्बनाधीन)	शाखा कार्यालय श्रीनगर
10. श्री मो. एम. श्रीवास्तव (निलम्बनाधीन)	प्रबंधक, शाखा कार्यालय फैजाबाद
11. श्री के. डी. तिमारी (निलम्बनाधीन)	भूतपूर्व प्रबंधक, शाखा कार्यालय उन्नाव अथ शाखा कार्यालय उन्नाव
12. श्री एस. जी. अग्रवाल (निलम्बनाधीन)	अधिकारी, शाखा कार्यालय कालपी रोड, कानपुर
13. श्री आर. के. मिश्रा	प्रबंधक, बाराबंकी
14. श्री आर. के. मेहरा	अधिकारी, क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ
15. श्री पी. आर. राठी	प्रबंधक, शाखा कार्यालय मटिहा
16. श्री के. आई. शेकई	प्रबंधक, श्री एण्ड एम डिपार्टमेंट, प्रधान कार्यालय, कानपुर
17. श्री गुलजार सिंह संधू	प्रबंधक (वसूली) मटिहा
18. श्री जमबीर सिंह	अधिकारी, शाखा कार्यालय, बरेली
19. श्री ए. के. दास	भूतपूर्व अधिकारी, भागलपुर बड़ा बाजार, कलकत्ता
20. श्री ए. श्री. मिश्रान	अधिकारी, शाखा कार्यालय, हवेली- बाद

21. श्री ए. के. सहगल

अधिकारी, क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर  
भूतपूर्व प्रबंधक, शाखा कार्यालय,  
मेस्टन रोड, कानपुर

22. श्री एस. के. सेठी

प्रबंधक, प्रतारदीय रीफिंग, केन्द्रीय  
कार्यालय, कानपुर

23. श्री आइ. एन. मेहरोत्रा

भूतपूर्व प्रबंधक राजिर नगर,  
लखनऊ अब अधिकारी शाखा कार्या-  
लय हजरतगंज, लखनऊ

24. श्री प्रबुद्ध राय

अधिकारी एम. एस. रोड, कलकत्ता

25. श्री एस. के. चक्रवर्ती

प्रबंधक, शाखा कार्यालय माणिक-  
दोला, कलकत्ता

26. श्री प्रदीप सहाय

प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर

27. श्री आर. के. अग्रवाल

प्रबंधक, शाखा कार्यालय, जम्मू

28. श्री डी. पी. चौधरी

प्रबंधक, शाखा कार्यालय बड़ा  
बीजार, कलकत्ता

S.O. 926(E).—Whereas on an application made by the Reserve Bank of India under sub-section (1) of section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949) the Central Government has made, under sub-section (2) of the said section 45 an order of moratorium in respect of the Hindustan Commercial Bank Ltd., Kanpur, under sub-section (2) of the said section.

And whereas the Reserve Bank of India in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of section 45 of the said Act has prepared a scheme for the amalgamation of the Hindustan Commercial Bank Ltd., Kanpur with the Punjab National Bank.

And whereas the Reserve Bank of India after having sent the said scheme in draft to the banks concerned in accordance with the provisions of sub-section (6) of the said section and after having considered the suggestions and objections received in regard to the said scheme had modified that scheme and forwarded it to the Central Government for sanction.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (7) of section 45 of the said Act, the Central Government hereby sanctions the scheme on and subject to the terms and conditions hereinafter mentioned.

(1) The Hindustan Commercial Bank Ltd, Kanpur shall be transferor bank and the Punjab National Bank shall be the transferee bank.

(2) As from the date which the Central Government may specify for this purpose under sub-section (7) of sec. 45 of the said Act thereafter referred to as the prescribed date) all rights powers, claims demands, interests, authorities, privileges, benefits, assets and properties of the transferor bank, movable and immovable, including premises subject to all incidents of tenure and to the rents and other sums of money and covenants reserved by or contained in the leases or agreements under which they are held, all office furniture, loose equipment, plant, apparatus and appliances, books, papers, stocks of stationery, other stocks and stores, all investments in stocks, shares and securities, all bills receivable in hand and in transit, all cash in hand and on current or deposit account (including money at call or short notice) with

banks, bultor, all book debts, mortgage debts and other debts with the benefit of securities, or any guarantee therefor, all other, if any, property rights and assets benefit of all guarantees in connection with the business of the transferor bank shall, subject to the other provisions of this scheme, stand transferred to, and become the properties and assets of, the transferee bank; and as from the prescribed date all the liabilities, duties and obligations of the transferor bank shall be and shall become the liabilities, duties and obligations of the transferee bank to the extent and in the manner provided hereinafter.

Without prejudice to the generality of the foregoing provisions, all contracts, deeds, bonds, agreements, powers of attorney grants of legal representation and other instruments of whatever nature subsisting or having effect immediately before the prescribed date shall be effective to the extent and in the manner hereinafter provided against or in favour of the transferee bank and may be acted upon as if instead of the transferor bank the transferee bank had been a party thereto or as if they had been issued in favour of the transferee bank.

If on the prescribed date any suit, appeal or other legal proceedings of whatever nature by or against the transferor bank is pending, the same shall not abate, or be discontinued or be in any way prejudicially affected, but shall, subject to the other provisions of this scheme, be prosecuted and enforced by or against the transferee bank.

If according to the laws of any country outside India the provisions of this scheme, by themselves, are not effective to transfer or vest any asset or liability situated in that country which forms part of the undertaking of the transferor bank to or in the transferee bank, the affairs of the transferor bank in relation to such assets or liability shall, on the prescribed date, stand entrusted to the Chief Executive officer for the time being of the transferee bank and the chief executive officer may exercise all powers and do all such acts and things as would have been exercised or done by the transferor bank for the purpose of effectively winding up its affairs. The chief executive officer shall take all such steps as may be required by the laws of any such country outside India for the purpose of effecting such transfer or vesting and in connection therewith the chief executive officer may, either himself or through any person authorised by him in this behalf, realise any assets or discharge any liability of the transferor bank and transfer the net proceeds thereof to the transferee bank.

(3) The books of the transferor bank shall be closed and balanced and balance sheets prepared in the first instance as at the close of business on the 24th May, 1986 and thereafter as at the close of business on the date immediately preceding the prescribed date and the balance sheets shall be got audited and certified by a chartered accountant or a firm of chartered accountants approved or nominated by the Reserve Bank of India for the purpose.

A copy each of the balance sheets of the transferor bank prepared in accordance with the provisions of

the foregoing paragraph, shall be filed by the transferor bank with the Registrar of Companies as soon as possible after it has been received and thereafter the transferor bank shall not be required to prepare balance sheets or profit and loss accounts, or to lay the same before its members or file copies thereof with the Registrar of Companies or to hold any annual general meeting for the purpose of considering the balance sheet and accounts or for any other purpose or to comply with the provisions of section 159 of the Companies Act, 1956, and it shall not thereafter be necessary for the Board of Directors of the transferor bank to meet as required by section 285 of that Act.

(4) I. The transferee bank shall, in consultation with the transferor bank, value the property and assets and reckon the liabilities of the transferor bank in accordance with the following provisions, namely:—

(a) Investments other than Government Securities shall be valued at the market rates prevailing on the day immediately preceding the prescribed date.

(b) (i) Government securities shall be valued as on the day immediately preceding the prescribed date in accordance with the principles laid down in the notification issued by Reserve Bank of India for the purpose of section 24 of the Banking Regulation Act, 1949.

(ii) The securities of the Central Government such as Post Office Certificate, Treasury Savings Deposit Certificates and any other securities or certificates issued under the small savings scheme of the Central Government shall be valued at their face value or the encashable value as on the said date, whichever is higher.

(iii) Where the market value of any Government Security such as the Zamindari Abolition Bonds or other similar security in respect of which the principal is payable in instalments is not ascertainable or is, for any reason, not considered as reflecting the fair value thereof or as otherwise appropriate, the security shall be valued at such an amount as is considered reasonable having regard to the instalments of principal and interest remaining to be paid, the period during which such instalments are payable, the yield of any security issued by the Government to which the security pertains and having the same or approximately the same maturity, and other relevant factors.

(c) Where the market value of any security, share, debenture, bond or other investment is not considered reasonable by reason of its having been affected by abnormal factors, the investment may be valued on the basis of its average market value over any reasonable period.

(d) Where the market value of any security, share, debenture, bond or other investment is not ascertainable only such value, if any, shall be taken into account as is considered reasonable, having regard to the financial position of the issuing concern, the dividends paid by it during the preceding five years and other relevant factors.



(e) Premises and all other immovable properties and any assets acquired in satisfaction of claims shall be valued at their market value.

(f) Furniture and fixtures, stationery in stock and other assets, if any, shall be valued at the written down value as per books or the realisable value as may be considered reasonable.

(g) Advances including bills purchased and discounted, books debts and sundry assets, will be scrutinised by the transferee bank and the securities, including guarantees held as cover therefor examined and verified by the transferee bank. Thereafter the advances, including portions thereof, will be classified into two categories, namely, "Advances considered good and readily realisable" and "Advances considered not readily realisable and/or bad or doubtful of recovery".

II. Liabilities for purposes of this scheme shall include all contingent liabilities which the transferee bank may reasonably be expected or required to meet out of its own resources on or after the prescribed date.

III. Where the valuation of any asset cannot be determined on the prescribed date, it may, with the approval of the Reserve Bank of India be treated partly or wholly as an asset realisable at a later date.

In the event of any disagreement between the transferee bank and the transferor bank as regards the valuation of any asset and/or the classification of any advance and/or the determination of any liability, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India whose opinion shall be final, provided that until such an opinion is received, the valuation of the item or portion thereof by the transferee bank shall provisionally be adopted for the purpose of this scheme.

It shall be competent for the Reserve Bank of India in the event of its becoming necessary to do so, to obtain such technical advice as it may consider to be appropriate in connection with the valuation of any such item of asset or determination of any such item of liability, and the cost of obtaining such advice shall be payable in full out of the assets of the transferor bank.

The valuation of the assets and the determination of the liabilities in accordance with the foregoing provisions shall be binding on both the banks and the members and creditors thereof.

(5) In consideration of the transfer of the property and the assets of the transferor bank to the transferee bank, the transferee bank shall discharge the liabilities of the transferor bank to the extent mentioned in this and the following clauses, namely.

(a) Any sums deposited by any employee of the transferor bank with that bank as staff security deposits together with interest, if any accrued thereon upto the prescribed date and all other outside liabilities as on the prescribed date excluding deposits shall be paid or provided for in full.

## EXPLANATION

For the purpose of this paragraph, interest payable on a deposit upto the prescribed date shall be regard as part of the concerned deposit.

(b) In respect of every savings bank account or current account or any other deposit including a fixed deposit, cash certificate, monthly deposit, deposit payable at call or short notice or any other deposit by whatever name called with the transferor bank and every other account not covered by clause (a), including interest to the extent payable under this scheme, the transferee bank shall open with itself on the prescribed date a corresponding and similar account in the name of the respective holder(s) thereof crediting thereto the prorata share available in respect of each of the accounts out of the assets referred to in paragraph (4) as valued for the purposes of this scheme on the prescribed date, after excluding from the said assets as so valued the advances considered not readily realisable or bad or doubtful of recovery, any asset or portion of an asset not valued on the prescribed date and any amount needed for the payments or provisions mentioned at clause (a) above and after adding to the said assets as so valued the aggregate amount of the payments made in terms of clause (a)(i) of paragraph 2 of the moratorium order dated the 24th May, 1986 issued to the transferor bank.

Provided that any payment made from a deposit account on, or after the close of business on 24th May, 1986 and before the prescribed date, shall be reckoned towards the amount to be credited under this sub-paragraph and, accordingly the amount to be credited shall be the pro rata share less the amount of such payment.

Provided further that where the transferee bank entertains a reasonable doubt about the correctness of the entries made in any particular account it may with the approval of the Reserve Bank withhold the credit to be made in that account in terms of clause (b) above till the transferee bank is able to ascertain the correct balance in such account.

## EXPLANATION

The term 'Prorata' shall, insofar as it occurs in this paragraph, mean in proportion to the respective amounts remaining due as at the close of business on the 24th May, 1986 'together with the interest payable up to the date immediately preceding the prescribed date and shall, insofar as it occurs elsewhere in this scheme, mean 'in proportion to the respective amounts remaining due at the time of the payment or distribution'.

(c) After the credits referred to in clause (b) above have been afforded, the transferee bank shall, with the least possible delay but in any case not later than three months from the prescribed date, furnish to the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation established under the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961 (hereinafter referred to as the Corporation) a list complying in all respects with the requirements of sub-section (1) of section 18 of that Act and thereafter

whenever amounts referred to in sub-section (2) of section 18 of that Act are received from the Corporation, the transferee bank shall credit each of the accounts referred to in clause (b) above, within seven days from the date or dates on which the amounts are received, to the extent of the sums due to that account in accordance with sub-section (2) of section 18 of that Act :

Provided that—

(i) If any account referred to in clause (b) has been closed or has matured for payment at the time when any amount for credit to that account is received from the corporation, the payment to the person entitled to the said amount shall be made by the transferee bank in cash;

(ii) in case the person entitled to any amount referred to in clause (b) cannot be found or is not readily traceable, provision for the amount due to such person shall be made and accounted for separately on the books of the Corporation itself and it shall not be necessary for the Corporation to pay the amounts to the transferee bank unless the person entitled to the amount is found or traced and the Corporation has decided to make the payment in respect of that person through the transferee bank.

(d) On the prescribed date, the entire amount of the paid-up capital and reserves of the transferor bank shall be treated as provisions for bad and doubtful debts and depreciation in other assets of the transferor bank and the rights of the members of the transferor bank shall, in relation to the transferor bank, be as provided for in paragraph (6) below :—

(6) In respect of

(A) every account mentioned in clause (b) of the preceding paragraph, the balance in the account, if any, remaining uncredited in terms of that clause and clause (c) and

(B) every share in the transferor bank, the amount of which was treated as paid-up towards share capital by or on behalf of each shareholder immediately before the prescribed date and/or the amount paid on account of the calls made by the transferee bank in pursuance of clause (i) below,

shall be treated as a collection account and shall be entered as such in the books of the transferee bank and payments against the account shall be made in the following manner, namely; (i) (a) the transferee bank shall, in the first instance, call upon every person who on the prescribed date was registered as the holder of a deferred share in the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares and the calls in arrears, if any and thereafter if it is found to be so necessary, every person who was, as on the

prescribed date, registered as the holder of an ordinary share of the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares or the calls in arrears, if any ;

(6) the transferee bank shall take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts due under clause (a) together with interest at six per cent per annum for the period of the default.

(ii) the transferee bank shall in respect of the advances, bills purchased and discounted, book debts and sundry debts and other assets, which are classified as "Advances considered not readily realisable and/or bad or doubtful of recovery" or which are or may be realisable wholly or partly after the prescribed date in terms of paragraph (4) above, take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce payment, provided, however, that if the amount of a debt or asset exceeds Rs. 50,000, the transferee bank shall not except with the approval of the Reserve Bank of India,

(a) enter into a compromise or arrangement with the debtor or any other person or write off any such debt or asset.

(b) sell or otherwise dispose of any securities transferred to it or any asset taken over by it.

(iii) the transferee bank shall in addition take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts, if any, awarded as damages by the High Court against any promoter, director, manager or other officer of the transferor bank under section 45L of the Banking Regulation Act, 1949, read with section 45H thereof and also with section 543 of the Companies Act, 1956;

(iv) the transferee bank may, out of the realisations affected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above, make payment or provision in respect of any contingent liability to the extent that the provision made therefor under paragraph (5) (a) proves to be inadequate, as also with the prior approval of the Reserve Bank, in respect of any liability whether contingent or absolute which was not assessed in terms of paragraph (4) above and has arisen or been discovered on or after the prescribed date :

(v) The transferee bank shall out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above after deducting therefrom the expenditure incurred for the purpose and, with the approval of the Reserve Bank of India, such other expenses as may be considered reasonable and the amount appropriated therefrom in terms of clause (iv) above, or out of the balance, if any, which may be available from out of the provision in respect of contingent liabilities as reckoned for the purposes of this scheme after the extent of such liabilities has finally been ascertained;

- (a) pay to the Corporation the amount received by the transferee bank from the Corporation under sub-section (2) of section 18 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961, and the amount, if any, provided for by the Corporation, and
- (b) pay, in the case of depositors in respect of whom no amounts have been received by the transferee bank from the Corporation, the amounts due in respect of the collection accounts, and in the case of depositors in respect of whom any amounts have been received by the transferee bank from the Corporation or have been provided for the Corporation the balance if any due to them in their collection accounts after the amounts due from the said accounts to the Corporation in respect of the payment made or provided for by the Corporation have first been paid in accordance with the provisions of sub-clause (a) above;

Provided that the amount due to the Corporation shall, if it becomes necessary so to do, be provided for in the books of the transferee bank and be paid to the Corporation in the manner specified in clause (b) of regulation 22 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation General Regulations, 1961

Provided further that the transferee bank shall make the payments referred to in clause (b) above,

- (i) if the corresponding or similar account mentioned in clause (b) of paragraph (5) has not been closed or has not matured for payment, by credit to that account, and
- (ii) if the said account has been closed or has matured for payment, in cash;
- (vi) The amounts due to the Corporation in terms of sub-clause (a) of clause (v) above and the amounts due to the collection accounts of the depositors in terms of sub-clause (b) of that clause shall rank equally among themselves, and if they cannot be paid in full shall abate in equal proportions;
- (vii) After the payments referred to in clause (v) of this paragraph have been made or provided for in full, the transferee bank shall out of the balance of the amounts referred to in clause (v) which may be available to it, make payments pro rata towards the amounts, if any, due to the accounts of the former shareholders of the transferor bank in the manner and to the extent specified below :

- (a) in the first place, the amounts, if any, due to the accounts of the former preference shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;
- (b) in the second place, the amounts, if any, due to the accounts of the former ordinary shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made; and thereafter;

- (c) in the third place, the amounts, if any, due to the accounts of the former deferred shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;
- (d) after all the amounts mentioned in sub-clauses (a), (b) and (c) above have been paid in full, the surplus, if any, remaining in the hands of the transferee bank shall be distributed pro rata among the former ordinary shareholders of the transferor bank.

Provided that if any question arises whether any amounts are due against an account mentioned in any of the above sub-clauses, it shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(viii) The amounts due to the collection accounts referred to in this paragraph shall be deemed to be liability of the transferee bank only to the extent provided for in this scheme;

(ix) On the expiry of twelve years from the prescribed date or such earlier period as the Central Government after consulting the Reserve Bank of India may specify for this purpose, any item referred to in clause (ii) of this paragraph which may not have been realised by that date shall be valued by the transferee bank in consultation with the Reserve Bank of India and the transferee bank shall distribute any amount or amounts determined in the light of that valuation after deducting therefrom first any sum necessary for meeting the liabilities referred to in clause (iv) of this paragraph which may remain unsatisfied as on that in the order and the manner provided in clauses (v), (vi) and (vii) above.

(x) The transferee bank shall invest such moneys realised on account of items mentioned in the preceding clauses (i), (ii) and (iii) as are not likely to be required by it for immediate payment, in interest bearing deposits with itself or with any other bank or banks, in such manner and for such periods as may be appropriate having regard to the facts and circumstances of the case or as the Reserve Bank of India may direct. The interest accrued shall be applied for meeting the liabilities referred to in clauses (iv), (v), (vi) and (vii) in the manner indicated therein.

(7) Notwithstanding anything to the contrary contained in any contract, express or implied, interest shall be paid in respect of the new accounts opened with the transferee bank in terms of paragraph (5) and credited in accordance with the provisions of that or the next succeeding paragraphs only at such rates as the transferee bank may allow.

(8) No depositor or other creditor of the transferor bank shall be entitled to make any demand against the transferor bank or the transferee bank in respect of any liability of the transferor bank to him except to the extent prescribed by this scheme.

(9) No suit or other legal proceedings shall lie against the Central Government, the Reserve Bank of India or the transferee bank or the transferor bank for anything which is in good faith done or intended to be done in pursuance of this scheme.

(10) All the employees of the transferor bank other than those specified in the schedule referred to in the succeeding paragraph shall continue in service and be deemed to have been appointed by the transferee bank at the same remuneration and on the same terms and conditions of service as were applicable to such employees immediately before the close of business on 24th May 1986.

Provided that the employees of the transferor bank who have, by notice in writing given to the transferor or the transferee bank at any time before the expiry of one month next following the date on which this scheme has been sanctioned by the Central Government, intimated their intention of not becoming employees of the transferee bank, shall be entitled to the payment of such compensation, if any, under the provisions of the Industrial Disputes Act, 1947, and such pension, gratuity, provident fund and other retirement benefits as may be ordinarily admissible under the rules or authorisations of the transferor bank immediately before the close of business on 24th May 1986.

Provided further that the transferee bank shall in respect of the employees of the transferor bank who are deemed to have been appointed as employees of the transferee bank be deemed also to have taken over the liability for the payment of retrenchment compensation in the event of their being retrenched while in the service of the transferee bank on the basis that their service has been continuous and has not been interrupted by their transfer to the transferee bank.

(11) The persons specified in the schedule annexed to this scheme shall on the prescribed date cease to be the employee of the transferor bank and notwithstanding anything contained in any law for the time being in force or any agreement or any contract, the person so specified shall be entitled to and only to such pension, gratuity, provident fund and other retirement benefits as may be ordinarily admissible to them under the rules or authorisations of the transferor bank immediately before the close of business on 24th May 1986.

Provided that the compensation, if any, for the loss of employment, so far as it relates to the unexpired portion of any contract of service, shall be such and only such as may be determined by the Reserve Bank (whose determination in this respect shall be final and binding).

Provided further that nothing herein shall be deemed to prevent the transferee bank from re-employing any person whose name has been specified in the schedule annexed to this scheme in such capacity and on such terms and conditions as the transferee bank may deem fit.

(12) The transferee bank shall, on the expiry of a period not longer than three years from the date on which this scheme is sanctioned, pay or grant to the employees of the transferor bank the same remuneration and the same terms and conditions of service as are applicable to the employees of corresponding rank or status of the transferee bank subject to the qualifications and experience of the said employees of the transferor bank being the same as or equivalent to those of such other employees of the transferee bank.

Provided that if any doubt or difference arises as to whether the qualifications or experience of any of the said employees are the same as or equivalent to the qualifications and experience of the other employees of corresponding rank or status of the transferee bank or as to the procedure on principles to be adopted for the fixation of the pay of the employee in the scales of pay of the transferee bank, the doubt or difference shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(13) The trustees or administrators of any provident fund and/or gratuity fund constituted or the employees of the transferor bank or as the case may be, the transferor bank shall on or as soon as possible after the prescribed date transfer to the trustee of the employees provident fund and or gratuity fund constituted for the transferee bank, or otherwise as the transferee bank may direct, all the monies and investments held in trust for the benefit of the employees of the transferor bank.

Provided that such latter trustees shall not be liable for any deficiency in the value of investments or in respect of any act, neglect, or default done before the prescribed date.

(14) The transferee bank shall submit to the Reserve Bank of India such statements and information as may be required by the Reserve Bank of India from time to time regarding the implementation of this scheme.

(15) The transferee bank shall furnish to the shareholders of the transferor bank a statement of affairs of the transferor bank in such form and at such periodical intervals as the Reserve Bank of India may specify in this behalf. The sending of such statements shall be discontinued when so directed by the Reserve Bank.

(16) Any notice or other communication required to be given by the transferee bank shall be considered to be duly given if addressed and sent by pre-paid ordinary post to the addressee at the address registered in the books of the transferor bank, until a new address is registered in the books of the transferee bank and such notice shall be deemed to be served on expiry of forty-eight hours after it has been posted. Any notice or communication which is of general interest shall be advertised in addition in one or more daily newspapers which may be in circulation at the place where the transferor bank was transacting its business.

(17) If any doubt arises in interpreting any of the provisions of this scheme, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India and its opinion shall be conclusive and binding on both the transferee bank and transferor bank, and also on all the members, depositors and other creditors and employees of each of these banks and on any other person having any right or liability in relation to any of these banks.

(18) If any difficulty arises in giving effect to the provisions of this scheme, the Central Government may issue to the transferor and the transferee banks or to either of them such directions not inconsistent with

this scheme as may appear to the Central Government, after consulting the Reserve Bank of India, to be necessary or appropriate for the purpose of removing the difficulty.

(19) The Central Government may if it is satisfied that it is necessary so to do, modify, vary or withdraw this Scheme in the light of the observations made by the Hon'ble Supreme Court on 18th December, 1986 while dismissing the the Special Leave Petitions Nos. 15721 of 1986 and 15085 of 1986 filed by Shri Shiv Kumar Tulsian and others.

[No. 17/2/86-B.O. III(ii)]  
MANTRESHWAR JHA, Jt. Secy.

#### SCHEDULE

Schedule attached to and forming part of the scheme for the amalgamation of the Hindustan Commercial Bank Ltd., as sanctioned by the Central Government under Sub-section (7) of Section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949)

Sl. No.	Name of the employee	Designation in the transferor bank
1.	Shri B.P. Singhal	Assistant General Manager, Kanpur
2.	Shri J.L. Gambhir	Assistant General Manager, Kanpur
3.	Shri R.D. Shah	Assistant General Manager, Kanpur
4.	Shri R.K. Bajpai	Assistant General Manager, Kanpur
5.	Shri J.K. Seth (under suspension)	Manager, B.O. Kota, formerly Manager, B.O. Agra
6.	Shri Satbir Singh (under suspension)	Officer, B.O., Haldwani
7.	Shri M.C. Awasthi (under suspension)	Manager, Jawalapur
8.	Shri B.S. Arora (under suspension)	R.M.O. Chandigarh
9.	Shri R.L. Jain (under suspension)	B.O. Srinagar

Sl. No.	Name of the employee	Designation in the transferor bank
10.	Shri O.N. Srivastava (under suspension)	Manager, B.O. Faizabad
11.	Shri K.D. Tewari (under suspension)	Formerly Manager B.O. Ugo now at B.O. Unnao
12.	Shri S.G. Agarwal (under suspension)	Officer B.O. Kalpi Road, Kanpur
13.	Shri R. K. Mishra	Manager, Barabanki
14.	Shri R.K. Mehra	Officer Regional Office, Lucknow
15.	Shri P.R. Rath	Manager, B.O. Bhatinda
16.	Shri K.I. Shepherd	Manager, O & M Deptt. H.O. Kanpur
17.	Shri Gulzar Singh Sandhu	Manager (Recovery) Bhatinda
18.	Shri Jasbir Singh	Officer B.O. Bareilly
19.	Shri A.K. Das	Officer, Bhagalpur, formerly at Bara Bazar Calcutta
20.	Shri A.D. Leon	Officer, B.O. Hyderabad
21.	Shri A.K. Sagal	Officer, Regional Office, Kanpur, formerly Manager B.O. Meston Road, Kanpur
22.	S.K. Singh	Manager, International Banking, C.O. Kanpur.
23.	Shri I.N. Mehrotra	Formerly Manager Rajinder Nagar, Lucknow now Officer at B.O. Hazrat Ganj, Lucknow
24.	Shri Prabudha Roy	Officer, N.S. Road, Calcutta
25.	Shri S.K. Chakravarty	Manager, B.O. Maniktolla Calcutta
26.	Shri Pradip Sahai	Manager, Regional Office, Kanpur
27.	Shri R.K. Agarwal	Manager, B.O. Jammu
28.	Shri D.P. Chaudhary	Manager, B.O. Burra Bazar, Calcutta.

